Journal of East-West Thought
ISSN: *2168-2259 (online)*
(https://jetjournal.us/)
Volume 15, Issue 1, Jan-March – 2025 Special Issue 1

Impact Factor: 7.665, Peer Reviewed and UGC CARE I

महिला व्यंग्यकार अर्चना चतुर्वेदी के व्यंग्य संग्रहों में चित्रित राजनीतिक बोध

डॉ. राजेंद्र काशीनाथ जाधव, हिन्दी विभाग, बहुजन समाज शिक्षण प्रसारक मंडळाचे कला, वाणिज्य आणि विज्ञान महाविद्यालय, सोनगीर. ता. जि. धुळे

प्रस्तावना

बहुचर्चित व्यंग्यकार और ब्रज भाषा की लेखिका अर्चना चतुर्वेदी हास्य-व्यंग्य के क्षेत्र में काफी चर्चित है। उनका उपन्यास 'गली तमाशेवाली', 'घूरो मगर प्यार से' और 'मर्द शिकार पर हैं' काफी चर्चित रहे हैं । 'घूरे का हंस' उनका नया उपन्यास है । हास्य के रंग में रंगे व्यंग्य में यह अनूठी कहानी है। अर्चना जी एक ऐसी अनूठी व्यंग्यकार है जिन्हें साहित्य की अनेक विधाओं पर महारत हासिल है। यह बात अलग है कि आधुनिकता के परिवेश में बदलती हुई जीवन शैली, चिंतन, खानपान और रहन-सहन पर पाश्चात्य सभ्यता ने यथेष्ट प्रभाव छोड़ा है। लेखिका इन सभी अवयवों पर अपने उपन्यास के चरित्रों और घटनाओं के माध्यम से बहुत कुछ कह जाती है।

संबोध शब्द: व्यंग्यकार, दावेदारी, जलसा, उम्मीदवार, भाषणबाजी, प्रजातंत्र, विरासत, खानदान, ब्रज भाषा, जीवनशैली।

विषय प्रवेश

बहुचर्चित व्यंग्यकार और ब्रज भाषा की लेखिका अर्चना चतुर्वेदी का जन्म 31 दिसंबर, 1973 को मथुरा (उत्तर प्रदेश) में हुवा है । उन्होंने व्यंग्य, कहानी, उपन्यास, लघु कथा, लेख, बाल साहित्य आदि में लेखन कार्य कर हिंदी साहित्य में अपना अमूल्य योगदान दिया है । उनके व्यंग्य संग्रह 'मर्द शिकार पर हैं', 'शराफत का टोकरा', 'लेडीज डॉट कोम', 'घूरो मगर प्यार से' आदि प्रकाशित हो चुके है । उनका उपन्यास 'गली तमाशे वाली' काफी चर्चा में रहा है । उनके साहित्यिक योगदान को देखते हुये उन्हें कई पुरस्कार और सन्मान प्राप्त हुए है,

१. उत्तर प्रदेश हिंदी संसथान 2020 का रामशंकर शुक्ल रसाल ब्रजभाषा पुरस्कार
२. सूजन सेवा संस्थान श्री गंगा नगर द्वारा वागीश्वरी सृजनसम्मान 2020
३. पंडित सुरेश चतुर्वेदी ब्रजभाषा सम्मान 2019
४. मध्यप्रदेश की संस्था द्वारा कादम्बरी सम्मान 2019
५. चंपा अग्रवाल अलुम्नाई द्वारा ब्रज-गौरव सम्मान 2018
६. उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान द्वारा 2016 का "शरद जोशी सम्मान"
७. श्री गणेश शंकर विधार्थी पत्रकारिता सम्मान 2014
८. मध्यप्रदेश की संस्था द्वारा "साहित्य सौरभ युवा व्यंग्यकार सम्मान 2014

'हम सब साथ-साथ' पत्रिका द्वारा 2013 युवा लेखिका सम्मान मिला । अर्चना जी ने लगभग सभी विधाओं में व्यंग्य रचना की है। अर्चना चतुर्वेदी जी की व्यंग्य रचना शराफत का टोकरा के "प्रजातंत्र और प्रजा" में चुनावों की दावेदारी को व्यंग्य से बहुत ही उम्दा तरीके से प्रस्तुत किया गया है, "जंगल के राजा महाराज सिंह ने जबसे जंगल में ये घोषणा करवाई है कि इस बार मंत्र और प्रधानमंत्री : की नियुक्ति

Copyright © | JET Network, All Rights Reserved

Journal of East-West Thought
ISSN: 2168-2259 (online)
(https://jetjournal.us/)
Volume 15, Issue 1, Jan-March – 2025 Special Issue 1
Impact Factor: 7.665, Peer Reviewed and UGC CARE I

सार्वजनिक चुनावों द्वारा करेंगे तब से जंगल का माहौल ही बदल गया था। आखिर बदलता भी क्यों नहीं पहली बार ये अधिकार आम जनता को मिला है।"[१]

सबसे ज्यादा उत्साहित तो जनता इस बात से थी कि इन पदों के लिए आम जनता में से ही कोई उम्मीदवार खड़ा हो सकता था। जगह-जगह मन्त्रणा हो रही थी, पार्टियाँ बन रही थी, उम्मीदवारों का चयन हो रहा था। ऐसा लग रहा था मानो जंगल में कोई बडा उत्सव या जलसा होने वाला हो। जंगल में जगह-जगह रैलियां, सभाएं और भाषणबाजी चल रही थी । आरोप और प्रत्यारोप के दौर शुरू हो चुके थे। हर उम्मीदवार का भाषण सुनकर ऐसा लग रहा था, मानो अपने प्रतिद्वंदी की कमियों पर पीएच.डी. करके आये थे और अब पब्लिक को गिना - गिना कर अपनी दावेदारी मजबूत करने में जुटे थे। हर पार्टी के कार्यकर्ता अपने-अपने उम्मीदवार की शान में कसीदे पढ़ रहे थे और पार्टी फंड बढ़ाने और वोट बैंक के जुगाड़ में लगे थे।

जंगल का मंगल कहीं गायब हो चुका था और उसकी जगह हिंसा, दंगे, टाइप शहरी खेलों ने ले ली थी। जंगल पुलिस का काम अचानक चौगुना भले ही हो चुका था पर पुलिस वालों की खस्ताहाल जेबों की सेहत में अत्यंत सुधार आया था वो काफी भरी-भरी और सेहतमंद हो चुकी थी। जंगल में लगी इस चुनावी आग को बुझाना तो इन्द्रदेव के बस में भी नहीं था।

जंगल का ये हाल देखकर बेचारे राजा सिंह अपना माथा पकड़े बैठे थे उनकी समझ में नहीं आ रहा था कि प्रजातंत्र की घोषणा मात्र से जंगल के भोले-भाले जानवरों के अन्दर का इंसान कैसे जाग गया? उन्हें डर सताने लगा कि यदि सचमुच प्रजातंत्र लागू हो गया तो जंगल के जानवरों और इंसानों में कोई अंतर रह पायेगा? और यदि ऐसा हुआ तो जंगल का भविष्य क्या होगा? "महाराजा सिंह अपने मंत्रियों संग इन्सान की आत्मा को जानवरों के अन्दर से निकालने के उपायों पर विचार विमर्श में व्यस्त हो गए और नव अंकुरित नेता राजतन्त्र की जड़ों में सेब लगाकर, प्रजातंत्र की भूमि को उर्वर बनाने के उपायों को अजमाने में लग गए।"[२]

अर्चना जी ने पुलिस और मुहल्ले वालों की" गली तमाशे वाली" में जो तस्वीर खींची है यह व्यंग्य की सच्चे अर्थों में अनुभूति है जो आम आदमी के साथ गली मोहल्लो में रहता हैं । मुहल्ले के जिन लोगों को पुलिस पकड़ कर ले गयी थी, वे लौट आये थे.. सबके असर से नंदू के पिता अपना मानसिक संतुलन खो बैठे थे। अब वे खुद को बहुत बीमार समझने लगे थे। कभी रोते, कभी हँसते कू लोगों को पहचान नहीं पाते । दिमाग के कुछ कनेक्शन ढीले हो गए थे। कभी सही जुड़ जाते तो नॉर्मल दिखते, बातें करते, कभी कुछ याद ना रहता। हाँ, पर एक आदत अब भी बरकरार थी आते-जाते महिलाओं में कोहनी मारना या पीछे से नोंच देना, जो इनके खानदान का ट्रेडमार्क थी। पिछली तीन पुश्तों से ये यहाँ कर रहे हैं। इनके पिता कू भाई और अब बेटे, मंदिरकू बाजार जहाँ मौका मिलता है महिलाओं के पिछवाड़े पर नोंच कर या कोहनी मार कर निकल जाते है। आए दिन पिटते है, पर खानदान की इज्जत का ख्याल है। भाई, बाप-दादाओं से जो विरासत में मिला है उसे नहीं संभालेंगे तो कहीं मुँह दिखाने लायक नहीं रहेंगे।

अब शहर में चर्चाएं होने लगीं। प्रधानमंत्री को जगह कौन लेगाकू मोय ती लगे अब चुनाव होंगे जल्दीकू अरे ना काका, इंदिरा जी की बेटा बनेगो बिनकी जगह, बू बेटा जो पायलट हते? हाँ, अब एक ही बेटा ती है । अरे बू का जाने राजनीतिः ये चर्चाएं हर अथाई पर हो रही थी। लोग अपना अपना ज्ञान बघार रहे थेकू ऐसा लगता था सबकी सहानुभत्ति काग्रेस संग ही थी। धीरे-धीरे शहर अपनी पुरानी पटरी पर वापिस आ रहा था। बाजार की रौनक भी अब वापिस आ रही भीकू शाम का समय था जवाहर की दुकान पर चाट

Copyright © | JET Network, All Rights Reserved

Journal of East-West Thought
ISSN: 2168-2259 (online)
(https://jetjournal.us/)
Volume 15, Issue 1, Jan-March – 2025 Special Issue 1
Impact Factor: 7.665, Peer Reviewed and UGC CARE I

खाने वालों की भीड़ लगी चीकू बहुएँ सिर ढके अपने-अपने मायके जा रही थीकृ भानु की दुकान पर समोसे के धान उतर रहे थेकू चूड़ी वाले के और कपड़ों वालों के यहाँ भीड़ जुटी हैकू सहालम (शादी का सीजन) सिर पर है, जिनके घर छोरा या छोरी का यह है वो खरीददारी में लगे है। अभी सब अपने-अपने काम अपने-अपने रास्ते जा ही रहे थे कि फिल्म का बड़ा-सा होर्डिंग पहिया पर चलते हुए निकला। साथ ही रिक्शे में सवार आदमी जोर-जोर से बोलने लगा, "भाइयों और बहनों आपके शहर मथुरा में अप्सरा टॉकीज में आ रही है, अमिताभ बच्चन की फिलम शराबीकृ हिरोइन है खुबसूरत जयाप्रदा साथ में है प्राणकृ और ओमप्रकाश..। प्रेम से भरपूर इस फिल्म का मजा लीजिये.. और फिर जोर-जोर से गाना बजने लगा, 'दे दे प्यार दे प्यार दे प्यार दे देकू लोग-बाग रुक कर बड़े ध्यान से होर्डिंग देखने लगे और बात करने लगे, "यार जे फिलम तो देखनी परेगी अमिताभ बच्चन की फिल्म बड़ी जोर की होबे अरे हिरोइन भी बड़ी सुन्दर लाग रही है, जरूर चलेगे।"[३]

अभी फिल्म की चर्चा चल ही रही थी की बाजों की और शोर-शराबे की आवाज आई। लोगों की नज़र उधर घूम गयी, जो जहाँ था खड़ा हो गया। बस लड़कियों और महिलाएँ मुँह नीचा करे हंसती हुई वहाँ से निकल गयी किसी मनचले की सवारी थी जिसे पुलिस वालों ने गधे पर बिठा कर जूतों की माला पहना रखी थी मुँह पर कालिख पुती थी, कपड़े फटे थे और खोपड़ी के बाल ऐसे काटे गए थे मानो शहर की नालियों हो । सब तालियों बजाते हंस-हंस कर उसके पीछे चल रहे थे लड़की छेडने की ये सजा होगी तो सब सुधर जाएँगे। दरोगा जी जोर से बोले। कहते कि अपनी गंदगी साफ करवे में काहे की शरम, अपने हरिजन भाईन के संग झाड़ू पकरी गांधी जी ने ती, उंच-नीच की भेद भी मिटायो। बिनकी बात मान लेते ती अब तक अपनों देश कैसो चमक जातो, पर खैर कोई बात ना जब जागो जब ही सबेरो।"हां, बात ती सही कह रहे हो, बात ती अपनी आदत बदलवे की हैगी, यदि हम सब अपनी आदत बदल लें, तौ गंदगी ही क्यों होवे?"[४]

"हां रे छोरा, आदत तौ लोग बागन की इत्ती खराब है कि पूछे मती अपनों पर साफ करकें कूटरो दूसरे के दरवज्जे पे फेंक देवे, भंडारों कररी ती दौना पत्तर ते सड़क भर देंगे। पर शहर के लोग ती ठीक होंगे वे ना करते होंगे ऐसो!"[५] अरे दहा का गांव, का शहर सब एक से है। अपने देश के लोग देश की हर चीज के अपनो समझे, हर जगह पर अपनो अधिकार माने। पार्क में पिकनिक मनावे जाएं, तौ तो खाय पीके सारो कचये इधर-उधर बिखर के आमे, चाहे वहां कूड़ेदान रक्खो होप। समुरे नंदू को सवारी कब निकलेगी..", पष्णू धीरे से राकेश के कान में बोला। सारे दोस्त हँस रहे चेकू सामने से नंदू आता दिख गया। पप्पू ने गर्दन घुमाई और बोला, "ला परमानंद कुल्फी खबा दे. गलो तर कर लें.. फिर तो जाडे आ रहे है।"[५]

"माता-कुमाता नहीं होती, पूत कपूत हो सकता है।" इस कहावत के ठीक विपरीत होते हैं ये लोग। जो बेटा पैसे वाला होगा उसी का साथ देंगे। गरीब बच्चे को या ईमानदार बच्चे को नौकर से अधिक नहीं समझते। और तो और, बड़े आदमी यानी किसी पैसे वाले की चमचागिरी करना या हर जगह उनका तुर्य देना की फलाना हमारा दोस्त है ये इनका फेवरिट काम होता है। इनमें से कुछ लोग तो ऐसे होते हैं जो मतलब के लिए गधे को बाप बना डालते है और मतलब निकलने पर हो सकता है पहचानने से भी इनकार कर दे। ऐसा वो अपनी संतान तक के साथ कर सकते हैं। 'ये मर्द या औरत किसी भी रूप में हो सकते हैं। इनकी एक खासियत और होती है की ये सिर्फ उसकी अच्छाई की बात करेंगे जिससे काम होगा और तो और ये अपने बुरे करम और दूसरों को दी तकलीफ याद नहीं रखते, पर दूसरों की एक गलती पकड़ कर पूरी जिन्दगी निकाल सकते हैं। ये खासकर उनके साथ बुरा बर्ताव करते हैं जो इन्हें जबाब ना दे या शरीफ हो। मैं तो भगवान से यही दुआ करती हूँ की भगवान आपको ऐसे महानुभावों से बचाए।

Copyright © | JET Network, All Rights Reserved

Journal of East-West Thought
ISSN: *2168-2259 (online)*
(https://jetjournal.us/)
Volume 15, Issue 1, Jan-March – 2025 Special Issue 1
Impact Factor: 7.665, Peer Reviewed and UGC CARE I

निष्कर्ष

१. हिन्दुस्तान विश्व का सबसे बड़ा लोकतांत्रिक देश है एवं यहीं लोकतंत्र का सबसे अधिक मज़ाक उड़ाया जाता है।

२. लोकतांत्रिक व्यवस्थाओं को संचालित करने वाले नेता ही भ्रष्ट होते हैं और वे हर गलत मार्ग अपनाते है, चाहे दुनिया भर में फ्री-फोकट का घूमना हो, सरकार के पैसे का दुरुपयोग करना हो या चुनाव में बूथ कैप्चरिंग हो, हिंसा, झूठा प्रचार, हत्या या असमाजिक तत्वों को इस्तेमाल करना यह मतदान के दौरान आम हो गया है।

३. अर्चना जी की व्यंग्य लेखन की इसी धारा में उनकी रचना भूये मगर प्यार से के 'प्रयोगवादी सरकारें" में तो शिक्षा की स्थिति बताते हुए यही देखने को मिलता है।

४. अर्चना जी समाज के प्रति कितनी सचेत है वे देख रही है कि वे प्रजातांत्रिक देश की अच्छाई, बुराई, विरोधाभासों, विद्रूपताओं पर किस प्रकार व्यंग किया जा सकता है और वे इसमें सफल भी हुई है।

५. भारतीय प्रजातंत्र और राजनीति के विरोधाभास ही अर्चना चतुर्वेदी जी के व्यंग्य लेखन की जमीन है और विषय वस्तु की दृष्टि से वह इसमें सफल होती दिखाई देती है।

संदर्भ ग्रंथ

१. चतुर्वेदी अर्चना, शराफत का टोकरा 'प्रजातंत्र और प्रजा', भावना प्रकाशन, दिल्ली २०१७, पृ. क्र. ८९
२. चतुर्वेदी अर्चना, गली तमाशे वाली, भावना प्रकाशन, दिल्ली, २०१९, पृ. क्र. ७३
३. चतुर्वेदी अर्चना, नज़रबट्टू, 'स्वच्छ भारतीय', नीरज बुक सेन्टर, दिल्ली – २०१९, पृ. क्र. ७२
४. चतुर्वेदी अर्चना, नज़रबद्ध, फूट डालो और शासन करो', नीरज बुक सेन्टर, दिल्ली २०१९, पृ. क्र. १०३
५. चतुर्वेदी अर्चना, पूरो मगर प्यार से, 'प्रयोगवादी सरकारें", भावना प्रकाशन, दिल्ली २०२०, पृ. क्र. १३२
६. वही पृ. क्र. १३३

Copyright © | JET Network, All Rights Reserved